

## विचलनों के बरक्स : रज़ा

दिसंबर 78 में मध्य प्रदेश कला परिषद् के कला समागम उत्सव 78 में मध्य प्रदेश शासन द्वारा श्री सैयद हैदर रज़ा के राजकीय सम्मान के अवसर पर अशोक वाजपेयी द्वारा लिखित प्रशस्ति पत्र

सैयद हैदर रज़ा का नाम उन चित्रकारों में अग्रणी है जिन्होंने स्वतन्त्रता के बाद आधुनिक भारतीय चित्रकला को उसकी अलग पहचान और आधुनिक भारतीय व्यक्तित्व दिया। पिछले लगभग तीस वर्षों से समूचे संसार के कला केन्द्र पेरिस में रहकर और उसकी आधुनिकतम सौंदर्यचेतना को आत्मसात् करते हुए श्री रज़ा की कला ने अपनी मूल भारतीय जड़ों से जीवनग्राही संबंध सक्रिय रखा। उनकी कला इस बात का सबसे विश्वसनीय साक्ष्य है कि अन्ततः भारतीय कलामानस आधुनिक दबावों और चुनौतियों का अपनी सृजनात्मक शर्तों पर सामना करने में पूरी तरह समर्थ है। रज़ा ने किसी सतही या नाटकीय भारतीयता या रूपाभिप्रायों का सहारा नहीं लिया। उन्होंने मध्य प्रदेश में बिताये अपने बचपन की यादों, नर्मदा के उद्गम के पास की रातों के रहस्य और भय, जंगलों और आदिवासी हाट-बाज़ारों की आदिम जीवन्तता, राजस्थानी मिनिएचर कला की सूक्ष्मताओं, प्राच्य दर्शन की अद्वैतवादी धारणाओं से अपनी कला के लिए एक ऐसा समृद्ध और अद्वितीय आधारलोक अर्जित किया है जो अपनी ऊर्जा और दृढ़ता में अप्रतिम है। अपने समय के अस्तित्व को उसकी रहस्यमयता और पवित्रता में रंग व्यक्त करने के प्रयत्न में रज़ा एक ऐसी अभिव्यक्ति तक पहुँच सके हैं “जो मानवीय वातावरण को अन्तरिक्ष से और इतिहास को प्रागितिहास से जोड़ती” है। स्वयं को काल के अन्तर्तम में रोपकर उनकी कला ने ऐसे समावेशी अनुभव को रूपायित किया है जो समकालीन होते हुए भी कालातीत है। मूल और अमूल से परे, अँधेरे के भय और उजाले की सुरक्षा को एकत्र करते हुए रज़ा ने एक सच्चे भारतीय कलाकार की तरह अपने सृजन में परस्पर विरोधी तत्वों को सहेजा है और ऐसी श्रेष्ठ कला को जन्म दिया है जो निस्सन्देह कालजयी है। उसकी अस्मिता हमारे समय के मनुष्य की मूल रंगतों के आपस में घुल-मिलकर शांत और आत्मीय होने से बनी है। उसमें आदिम शक्ति के साथ आधुनिक परिष्कार है— ऐन्द्रिक उपस्थिति के साथ आध्यात्मिक दीप्ति। उनकी रंगविकलता के पीछे अभिव्यक्ति के ऐसे सारे खतरे उठाने का साहस छुपा है जो मनुष्य की अपने संसार से बुनियादी एकता की सहज सचाई को सारे विचलनों के बरक्स स्थायी रूपाकार देकर उभार सके।